12.01 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

VISIT OF A SOUTH AFRITAN DOCTOR TO THE ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICLA SCIENCES, NEW DELHI.

श्री रामसेवक यादव (बारांबकी) : अध्यक्ष महोदय, मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर स्वास्थ्य मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वे इस बारे में एक वक्तव्य द :

> "अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्था, नई दिल्ली, हाल ह। में में दक्षिण अफ्रीका के एक डाक्टर का आगमन।"

स्वास्थ्य मंत्री (डा० सुशीला नायर) : आक्लैण्ड पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल कमेटी, आकलैण्ड यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैण्ड के साथ हुये एक वैज्ञानिक नियोजन में भाग लेने के बाद अपने देश को वापिस जाते हुये केप टाउन विश्वविद्यालय के सर्जिकल रिसर्च के असोसियेट प्रोफेसर, प्रोफेसर सी. एन. बर्नार्ड अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान्, नई दिल्ली में आये। डाक्टर बर्नाड़ं विश्व के माने हुये हृदय शल्य चिकित्सकों में से एक हैं। रोगग्रस्त महाधमनी और द्विदल-कपाटों (एरोटिक और माइट्रल वाल्व) के स्थान पर कृत्रिम कपटा (वाल्व) लगाने का उनका टेक्नीक बड़ा महत्वपूर्ण माना जाता है। हृदय शल्य चिकित्सा को डा० बर्नाडं का सर्वोत्तम योगदान यह है कि उन्होंने जटिल जन्म-जात हृदय विकारों तथा हृदय के अवाप्त हृत्कपाट रोग (एक्वाइडं वाल्वुलर रोग) की शल्य व्यवस्था (सर्जिकल मेनजमेंट) की है। उन्होंने हृत्कपाटों के कृत्रिम प्रास्थेसिस की अपनी विधि निकाली है जिसका बहुत से रोगियों पर सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा चुका है।

डाक्टर बर्नाड डा० गोपी नाथ से, जब वह वेल्लोर में थे, तब उनसे उनका पत्र व्यवहार हुआ और उन्होंने डाक्टर गोपी नाथ से मिलने के लिये भारत आने का सुझाव दिया था। चूंकि डाक्टर गोपी नाथ इस बीच अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान में काम करने लगे थे अतः उस संस्थान् ने सरकार से डाक्टर बर्नार्ड के न्यूजीलण्ड वापिस जाते समय भारत आने की अनुमति मांगी। यह माना गया कि उनकी भारत यात्रा यहां हृदय शल्य चिकित्सा के विकास और विशेषतया रोगग्रस्त महाधमनी और द्विदल हृत्कपाटों के बदलने के विज्ञान मे उपयोगी सिद्ध होगी। भारत में हृदय के अगत हृत्कपाट रोग से पीड़ित ऐसे रोगी जिनको इस प्रकार की शल्य चिकित्सा की आवश्यकता है, बहुत से देखने में आते हैं।

गृह तथा परराष्ट्र मंत्रालयों से परामर्श करके यह इजाजत दे दी गई। डाक्टर बर्नार्ड 28 मार्च, 1965 को दिल्ली आये और 7 अप्रैल, 1965 को यहां से चले गये। वह आकलण्ड से जहां उन्हें न्यूजीलैण्ड विश्वविद्यालय आकलैण्ड में हृदय शल्य चिकित्सा के प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक की कांफरेंस मे भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था, वापिस जा रहे थे। वस्तुतः वह न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया से बाहर के दो प्रसिद्ध आमंत्रित व्यक्तियों में से एक थे।

अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान नई दिल्ली में अपनी यात्रा के दौरान डाक्टर बर्नाडं ने दो अभिभाषण दिये तथा हृदय के आपरेशनों के प्रदर्शन की फिल्में भी दिखाई। उनके तथा अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान के सम्बंधित कर्मचारियों के बीच विचार विमर्श हुआ जिसके अन्तर्गत इन कर्मचारियों को डाक्टर बर्नाडं के महाधमनी और द्विदल हृत्कपाटों को पूर्ण करने की शल्य विधि (प्रास्थसिस) के प्रयोग के बारे में बड़ी मूल्यवान जानकारी प्राप्त हुई। यह विधि अन्य देशों में प्रयुक्त विधि से ज्यादा में सुधरी हुई विधि है। डाक्टर बर्नाडं ने अखिल भारतीय चिकित्सा संस्थान् के प्रयोग

[डा० सुशीला नायर]

के लिये कृत्रिम हृत्कपात (वाल्व) भी दान किये जो बाजार में बिकते नहीं हैं ।

श्री रामसेवक यादव : क्या यह सही है कि दक्षिण अफ्रीका की रंग भेद नीति के कारण अक्तूबर, 1964 में डा० के० एस० सैन को जोहान्सवर्ग के विख्यात सर्जन के निमंत्रण देने पर भी वहां की सरकार ने वहां जाने की अनुमति नहीं दी थी । यदि यह सही है तो इस सरकार का उन्हें निमंत्रण देना कहां तक उचित था ।

डा० सुशीला नायर : डा० सेन के बारे में सरकार के पास कोई जानकारी नहीं है । इस सम्बन्ध में सरकार की मार्फत कोई पत्र व्यवहार नहीं हुआ था । जहां तक डा० वर्नार्ड की बात है, उनको, जैसा मैंने बतलाया, कोई विशेष नियंत्रण नहीं दिया गया था । उन्होंने इच्छा प्रकट की थी कि जब वह यहां से हो कर जायेंगे तो जाते हुए हमारे डाक्टरों से मिलना चाहेंगे । उन्होंने हमारे डाक्टरों को इतना काबिल समझा कि वह उनके साथ बातचीत करे और इस चीज की हमने इजाजत दी ।

श्री किशन पटनायक (सम्बलपुर) : डा० वर्नार्ड रंगभेदवादी हैं या नहीं । वे रेसिस्ट हैं या नानरेसिस्ट हैं, इसका पता आपने किया है या नहीं ।

डा० सुशीला नायर : साउथ अफ्रीका में तो रंगभेद जरूर है । लेकिन डा० बर्नार्ड बड़े सज्जन व्यक्ति हैं । वह रंगभेद को नहीं मानने थे तभी तो उन्होंने काले लोगों से, हमारे जैसे भूरी चमड़ी वाले लोगों में आ कर बातचीत करके ज्ञान का आदान प्रदान करना पसन्द किया । इसलिये उन को इजाजत दी गई ।

श्री किशन पटनायक : वे दूसरे काले लोगों को अपने यहां न घुसने देने के पक्ष में है या नहीं ?

अध्यक्ष महोदय : वह कहती हैं कि नहीं हैं ।

श्री किशन पटनायक : डा० बर्नार्ड अपने देश में काले लोगों को घुसने देंगे क्या ?

Shri D. C. Sharma (Gurdaspur): The way she has described us is highly insulting (*Interruptions*).

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य यह जानना चाहते हैं कि वह रंग भेद के हक में हैं या नहीं ।

डा० सुशीला नायर : मैंने आप से विनय करके कहा कि वह रंगभेद के मानने वाले होते तो हमारे बीच में क्यों आते, वे रंगभेद के मानने वाले व्यक्ति नहीं हैं, लेकिन मेरे .

अध्यक्ष महोदय : जो जवाब आता है उसे माननीय सदस्य शांति से सुनें ।

डा० सुशीला नायर : मैं बड़े अदब से एक बात कहना चाहती हूं कि वह डिप्लोमेटिक आदमी नहीं हैं, न उनको किसी को आने देने की इजाजत देने या न देने का हक है । वह सरकार के अन्दर बैठे हुए नहीं हैं । वह बेचारे डाक्टर हैं और अपने डाक्टरी काम को वैज्ञानिक ढंग से देखते हैं, रेस की दृष्टि से नहीं देखते ।

Shri Warior (Trichur): May I know whether, before extending the invitation to Dr. Barnard, his antecedents were screened by the External Affairs Ministry and whether they tried to get some information about his other activities, apart from his surgical activities, from any other friendly Government which is in touch with the South African Government?

Dr. Sushila Nayar: The antecedents of this doctor are highly satisfactory and very honourable in every way.

Shrimati Renu Chakravartty (Barrackpore): Is the hon. Minister aware

that many eminent atheletes, sportsmen, writers, artists and scientists who are coloured are not considered to be eminent, so far as the *apartheid* is concerned, and may I know whether it is a fact or not that the World Medical Associations Conference which was scheduled to be held in South Africa had to be cancelled due to the fact that the South African Government refused to permit equal treatment to the coloured people, and about that time the Government decided not to permit the whites from South Africa to visit India, and whether this particular decision of the Government of India has been rescinded as a result of this Dr. Barnard's visit to India?

Dr. Sushila Nayar: As a general rule, the Government of India do not allow South Africans to come here. However, in the field of science, the Government of India's view has been that we should not create barriers, and we have allowed the South Africans for the Geological Congress and also in other instances . . .

Shrimati Renu Chakravartty: You should never do it.

Dr. Sushila Nayar: It is a rule that we have imposed on ourselves, but at the discretion of the Government of India it can be relaxed whenever considered necessary.

Shrimati Renu Chakravartty: It has been relaxed in this case. That is the hon. Minister's point?

श्री यशपाल सिंह (कैराना) : यह बात साफ नहीं की गयी । माननीया स्वास्थ्य मंत्री महात्मा गांधी की सबसे बड़ी चेली हैं । साउथ अफ्रीका में महात्मा गांधी के ऊपर अत्याचार किए गए, और आज भी भारतीयों के साथ वहां अपमानजनक व्यवहार किया जा रहा है । इसको देखते हुए क्या इस डाक्टर को यहां बुलाना मुनासिब था ? हमारे दिल में भी घृणा है । वह अपने आप को सफेद कहते हैं । सफेद कोढ़ी होता है । अगर उनके दिल में हमारे प्रति घृणा है तो हमारे दिल मे भी घृणा है । क्या उनको यहां बुलाने से जो भारतीयों के दिल को ठेस लगी है उसको निराकरण के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय कोई कार्रवाई कर रहा है ?

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) : चेली से क्या मतलब है ?

डा० सुशीला नायर : मेरे भाई जिस दुःख का जिक्र कर रहे हैं उससे मेरी भी सहानुभूति है । इसीलिये मुझ को तो लगता है कि यह अच्छा ही है कि कुछ वैज्ञानिक लोग कम से कम हमारे बीच में आएं, आकर बैठें हम को देखें और हिन्दुस्तान के लिये इज्जत लेकर अपने देश में वापस जाएं और लोगों को बता सकें कि वे मूर्ख हैं कि ऐसी नीति चला रहे हैं । (*Interruptions*)

Shrimati Renu Chakravartty: Why do we then have this policy of not allowing South Africans to come here? What is the meaning of this hypocrisy? It is sheer hypocrisy.

Shri Daji (Indore): The reply just now given by the hon. Minister contradicts the reply given to Questions before that it continues to be the Government's policy not to allow them except in exceptional cases. But now the hon. Minister of Health theorises and says that Government would consider it good if people came here and lorded over us and then went back and reported that the Indian people could still be lorded over.

The only pertinent question in this whole matter is whether the Government had made this pertinent enquiry whether this doctor was against *apartheid* being practised in South Africa. The question is not one of his coming here and teaching the old Indian niggers some surgery that he would be prepared to do here; any of there would be prepared to do it. But the point is whether this doctor had come out openly and expressed

[Shri Daji]

openly against the *apartheid* policy in South Africa. Have Government obtained information on this point or not?

Dr. Sushila Nayar: My hon. friend seems to forget that doctors are not politicians.... (*Interruptions*).

Shri Ranga (Chittoor): Who says so?

An hon. Member: All the while they are politicians.

Mr. Speaker: If the hon. Minister answers the question whether any enquiry had been made, then this question would be finished.

Dr. Sushila Nayar: I was just going to say that excepting people who like a few of us might come to Parliament and cease to be scientists, it is to be understood that scientists do not go about always taking part in this or that type of agitation or activity against *apartheid*. May I say that I am not going to say anything further as to what the views of the gentleman are because I am not here to create troubles for him in his own country? (*Interruptions*)

Mr. Speaker: Order, order. Why should there be such noise over it? The hon. Minister was asked simply to say whether any enquiry had been made. She can say 'Yes' or 'No'. That finishes the matter.

Dr. Sushila Nayar: Enquiries in such a case can only be on an individual basis, and we have satisfied ourselves.

The Prime Minister and Minister of Atomic Energy (Shri Lal Bahadur Shastri): It seems that no enquiry as such was made. But we stick to our policy that generally we do not or we will not allow the South Africans to come here. But there can be rare exceptions so far as science is concerned; even in that case, we shall have to take the necessary precautions. But in science there should be no barriers, and, therefore, we could allow such exceptions so far as science is concerned.

Mr. Speaker: Shri Hem Barua.

Shri H. N. Mukerjee (Calcutta Central): May I seek a clarification of the Prime Minister's statement?

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद) : अध्यक्ष महोदय, असल चीज यह है कि वह जातिभेद वाले हैं या गैर जातिभेद वाले हैं । और वह गैर जाति भेद वाले हैं तो हम उनका स्वागत करते हैं, वैज्ञानिक ही क्यों । आप मेहरवानी करके इसे साफ कर दीजिए ।

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए ।

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं शास्त्री जी से कह रहा हूं कि इसे साफ कर दें । खाली वैज्ञानिक ही क्यों ? अगर लुथुली आयें तो उन्हें रोकेंगे क्या ? सवाल दक्षिण अफ्रीकी का नहीं, बल्कि जातिभेद का है ।

Shri Hem Barua (Gauhati): May I ask a question?

Mr. Speaker: I had called him, but if I am not permitted to proceed, I cannot help him.

Shri Hem Barua: We have refused to maintain diplomatic, political and economic relations with South Africa because we hate the policy of *apartheid* pursued in that country, and we want to create world opinion against that policy. This is a moral and political attitude we have adopted. In that context, may I know how it is that the Government have decided, in the name of science, to invite or to ask, Dr. Bernard to come to this country, however great a physician or surgeon he might be? Does it not go counter to our general policy of not maintaining diplomatic, political and economic relations with South Africa?

Mr. Speaker: The answer has been given. Now it is entering into argument, that it should not have been so. That is a different thing.

Shri Hem Barua: We have taken a moral attitude. Will that not be affected?

Mr. Speaker: I am not entering into the question as to whether it was right or wrong. The information has been given and the point clarified.

Shri Hari Vishnu Kamath (Hoshangabad): The Health Minister, if I understood her aright, said that the general policy, which is a very sound one, adopted by Government in regard to South Africa has been relaxed in some cases, depending on the merits of the individuals concerned. Is the Prime Minister aware of a single instance . . .

Shri Ranga: Previous instance.

Shri Hari Vishnu Kamath: . . . where on a reciprocal basis, or to reciprocate the gesture made by the India Government, the South African Government has admitted an Indian, however eminent he may be in his own field of activity, into that country?

Dr. Sushila Nayar: I think that some of our men will soon have that privilege extended to them as a result of the policy that we are following in keeping with the importance we attach to science.

Shri Hari Vishnu Kamath: My question was a specific one whether in the past there has been any instance.

Mr. Speaker: Whether so far anyone has been admitted—that is the question.

Dr. Sushila Nayar: I am not aware of that.

Shri Hari Vishnu Kamath: Is the Prime Minister aware? She may not be aware. But the Prime Minister may be. He is nodding his head.

Mr. Speaker: Papers to be laid on the Table.

12.18½ hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE

INDIA'S NOTE TO CHINA

The Minister of External Affairs (Shri Swaran Singh): I beg to lay on the Table a copy of Government of India's note dated the 7th April, 1965 to be given to the Embassy of China in India. [*Placed in Labrary, see* No. LT-4185/65].

NOTIFICATIONS UNDER PROHIBITION ACT

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Hathi): I beg to lay on the Table a copy each of the following Notifications under sub-section (3) of section 62 of the Prohibition Act, 1950, read with clause (c) (iv) of the Proclamation dated the 24th March 1965, issued by the Vice-President discharging the functions of the President, in relation to the State of Kerala:

(i) SRO 48/64 dated the 3rd March 1964;

(ii) SRO 269/64 dated the 1st Sept. 1964;

(iii) SRO 283/64 dated the 15th Sept. 1964;

(iv) SRO 306/64 dated the 6th Oct. 1964;

(v) SRO 378/64 dated the 8th Sept. 1964.

[*Placed in Library, see No.* LT-4186|6].

12.19 hrs.

RE: POINT OF PRIVILEGE

Shri Bade (Khargone): On a point of order. This is very important. That is about whether the President of the Congress, Shri Kamraj, can give a statement . . .

Mr. Speaker: He has already consulted me. I have told him . . .